पंजीयन संख्या : 68939/98 अंक - 26, वर्ष 24

ज्ञान तत्व

समाज शास्त्र

अर्थ शास्त्र

धर्म शास्त्र

राजनीति शास्त्र

438

-: सम्पादक :-

बजरंग लाल अग्रवाल

रामानुजगंज (छ.ग.)

सत्यता एवं निष्पक्षता का निर्भीक पाक्षिक

पोस्ट की तारीख 16/12/2023

प्रकाशन की तारीख 30/12/2023

पाक्षिक मूल्य - 2.50/- (दो रूपये पचाय पैसे)

''शराफत छोड़ो, समझदार बनो''

''सुनो सबकी, करो मन की''

''समस्याओं के प्रणेता, कर कानून नेता''
''समाधान का आधार ज्ञान यज्ञ परिवार''

''चाहे कोई अत्याचार, नहीं करेंगे नही सहेंगे''
''हमें सुराज्य नही, स्वराज्य चाहिए''

विशेष लेख : *Margdarshak web link*

1.शोषण कोई अपराध नहीं

मैं लंबे समय से एक समस्या बढ़ती हुई देख रहा हूं और उसके समाधान पर भी सोचता रहा हूं। समस्या यह है कि स्वतंत्र स्पर्धा और कमजोरों की सहायता इन दोनों के बीच किसी प्रकार का तालमेल नहीं है । हमें कब समाज के साथ खड़ा होना चाहिए और कब राज्य के साथ खड़ा होना चाहिए यह भी एक गंभीर प्रश्न है। यह दोनों ही सवाल एक दूसरे से जुड़े हुए भी हैं। इन प्रश्नों और समस्याओं के कारण और निवारण पर मैं कल से तीन दिनों तक चर्चा करना चाहता हूं। वर्तमान समय में मणिपुर में जो हो रहा है अथवा पंजाब में जो कुछ होता हुआ दिख रहा है वह कोई मणिपुर और पंजाब का प्रश्न नहीं है बल्कि कहीं ना कहीं स्वतंत्र प्रतिस्पर्धा और कमजोरों की मदद समाज और राज्य इन दोनों के बीच संतुलन इन दो प्रश्नों से जुड़ा हुआ है यह समस्याएं इसी तरह बढ़ भी रही हैं और इनका कोई समाधान अभी तक दिख नहीं रहा। इन समस्याओं का समाधान क्या हो सकता है उसकी सीमाएं क्या होनी चाहिए इन गहन प्रश्नों पर मैं कल से चर्चा करने की सोच रहा हूं।

प्राचीन समय में व्यक्ति एक स्वतंत्र इकाई था। संगठन की पहचान राज्य के नजर में परिवार, गांव और जिले के रूप में थे जाति, धर्म संगठन के स्वरूप नहीं थे। प्रत्येक व्यक्ति को एक दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा करने की पूरी स्वतंत्रता थी। शोषण कोई अपराध नहीं होता था क्योंकि दुनिया के प्रत्येक व्यक्ति में क्षमता और योग्यता कभी एक समान नहीं होती और सबको अपनी–अपनी व्यक्तिगत क्षमता और योग्यता के आधार पर ही सम्मान सुविधा या पद प्राप्त होते थे। राज्य कभी इसमें दखल नहीं देता था। जो व्यक्ति बिल्कुल अक्षम होता था और स्वतंत्र प्रतिस्पर्धा से बाहर हो जाता था उसे समाज या राज्य जीवित रखने तक की सुविधा देते थे। दुर्भाग्य से समाज को कमजोर करके राज्य ने सब कुछ अपने पास समेट लिया और उसमें व्यक्ति के स्थान पर जाति, धर्म, लिंग आदि के आधार पर बनने वाले संगठनों को मान्यता दे दी। हर मजबूत कमजोर का शोषण करता है यह एक प्राकृतिक सिद्धांत है। बिना शोषण के

कोई मजबूत प्रमाणित ही नहीं हो सकता लेकिन राज्य ने शोषण को अपराध मानने की गलती कर दी। इससे राज्य कमजोर वर्गों की सहायता करने लगा और उसका दुष्परिणाम हुआ कि स्वतंत्र प्रतिस्पर्धा पर बुरा असर पड़ा। स्वाभाविक है कि दो प्रतिस्पर्धारत व्यक्तियों में से आप किसी भी आधार पर किसी एक की मदद करेंगे तो वर्ग विद्वेष पैदा होगा ही। लेकिन हमारे संविधान निर्माताओं ने संविधान की प्रस्तावना में ही सम्मान और समानता शब्द डालकर गलती कर दी। सरकार को सिर्फ प्रतिस्पर्धा से बाहर व्यक्तियों को सहायता देनी चाहिए प्रतिस्पर्धा कर रहे लोगों को नहीं। लेकिन वर्ग संघर्ष के सारे बीज हमारी सरकार ने बोये हैं और आज भी उसी आधार पर वर्ग संघर्ष को बढ़ा रही है। निकम्मे लोग शोषण को अपराध कहने लगे हैं और शोषण को अपराध कहने वाले दिन–रात वर्ग संघर्ष की दुकानदारी कर रहे हैं जिसमें राज्य सहायक हो रहा है। यही मुख्य कारण है कि समाज में वर्ग संघर्ष लगातार बढ़ रहा है।

मैंने यह लिखा है कि किसी भी प्रकार का शोषण ना अपराध होता है ना अनैतिक होता है हर प्रकार के कंपटीशन में शोषण स्वाभाविक होता है जो लोग शोषण को अपराध मानते हैं वे लोग पूरी तरह गलत हैं आज उन्हें आकर मेरे प्रश्न का उत्तर देना चाहिए कि शोषण अपराध कैसे हो गया। सच बात यह है कि शोषण को अपराध कहने वाले ही शराफत का शोषण करते हैं यह चालाक लोग संगठित हो जाते हैं और शरीफ लोगों पर अत्याचार करते हैं। शरीफों का शोषण करने वाले धूर्त लोग शोषण के खिलाफ दिन–रात आवाज उठाते रहते हैं। किसी की मजबूरी का लाभ उठाना शोषण होता है किसी व्यक्ति को 1 किलो अनाज देकर दिन भर काम लेना शोषण है किसी दूसरे व्यक्ति को 10 किलो अनाज देकर उसकी सहमति के बिना काम लेना अपराध है शोषण और अत्याचार अलग–अलग होता है इसलिए किसी की मजबूरी का लाभ उठाना अत्याचार नहीं होता। सच्चाई है कि राजनीतिक दल अथवा चालाक लोग शोषण रोकने के नाम पर ही समाज में भ्रम फैलाते रहते हैं शोषण रोकने के नाम पर समाज को में वर्ग विद्वेष बढ़ाते रहते हैं अब इस बात को समझने की आवश्यकता है।

यहाँ हम यह चर्चा करेंगे कि स्वतंत्रता की प्रतिस्पर्धा में किसी भी पक्ष को सहायता करना वर्ग संघर्ष का कारण होता है। कमजोरों की मदद करना राज्य का दायित्व नहीं होता बल्कि समाज का कर्तव्य होता है। भारत ने दुनिया की अंधी नकल करके कमजोरों को मदद करने का दायित्व स्वीकार कर लिया। इस गलती के अंतर्गत हर प्रकार के कमजोरों की आर्थिक, सामाजिक मदद की गई जिसके कारण वर्ग संघर्ष बढ़ा। इसी गलती के अंतर्गत कमजोरों को

आरक्षण दिया गया और कमजोरों को अनेक प्रकार के अधिकार भी दिए गए एवं सुविधाएं भी। इसी नीति के अंतर्गत मुफ्त भोजन, मुफ्त शिक्षा, मुफ्त चिकित्सा जैसे अनावश्यक कार्य किए गए। इस गलत नीति का परिणाम हुआ कि देश में जातिवाद का जहर घुल रहा है। इस नीति का परिणाम हुआ कि देश में स्वावलंबन कमजोर हो रहा है। स्वयं आत्मनिर्भर ना होकर सरकार से सुविधा मांगने की लूट मची हुई है। किसी भी प्रकार के आरक्षण में राजनीति को भले ही मजबूत किया हो किंतु समाज को कमजोर किया है। इसीलिए अब समय आ गया है कि एक देश एक व्यक्ति की मान्यता लागू की जाए।

किसी व्यक्ति का शोषण करना किसी भी रूप तरीके से अपराध नहीं होता है जब तक उसमें हिंसा या जालसाजी शामिल न हो। किसी व्यक्ति की सहमति से उसकी मजबूरी का लाभ उठाना अनैतिक हो सकता है अपराध हो ही नहीं सकता। अनैतिक भी इस स्थिति में होगा जब समाज ने उस तरह का कोई नियम बनाए हो। जब तक समाज ने कोई वैसा नियम नहीं बनाया है तब तक वह कार्य अनैतिक भी नहीं होगा स्वतंत्र प्रतिस्पर्धा तब तक नैतिक होती है जब तक उसमें जालसाजी और हिंसा का समावेश ना हो और उसने समाज के बनाए नियमों को न तोड़ा हो।

मेरे यह लिखने पर मेरे बहुत से मित्रों ने असहमति व्यक्त की कई ने तो इसका विरोध भी किया यहां तक की मेरे अच्छे मित्र भी मेरी बात से सहमत नहीं हुए । एक मित्र नरेंद्र मिश्रा जी ने तो इस बात की चुनौती ही दे दी कि वह इस संबंध में खुली बहस के लिए तैयार हैं। मैं अपने लिखे पर पूरी तरह कायम हूं मैं यह बात आज नहीं लिखी है 60 वर्ष पहले भी लिखी थी और हमेशा बोलता रहा हूं कि शोषण तब तक कोई अपराध नहीं होता जब तक उसने हिंसा और जालसाजी का समावेश ना हो मैं स्पष्ट कर दूं की वर्तमान दुनिया में जो असत्य धारणाएं फैलाई गई हैं उन असत्य धारणाओं को चुनौती देना हमारा आप सबका कर्तव्य है और यही पवित्र कार्य मैं कर रहा हूं । शोषण के संबंध में भी दुनिया में जो धारणा बनी हुई है वह असत्य है।

मेरे एक मित्र ने शोषण का एक उदाहरण मांगा है जिसमें बल प्रयोग और हिंसा न हुई हो मैं आपको बताना चाहता हूं कि एक पुरुष यौन भूख से पीड़ित है एक महिला उससे

₹5000 में आधे घंटे का सौदा करती है वह ₹5000 ले लेती है और पुरुष उसे ₹5000 दे देता है बताइए किसने किसका शोषण किया।

2.समाज में वर्ग संघर्ष के प्रमुख कारणः हम पिछले तीन दिनों से लगातार इस बात पर चर्चा कर रहे हैं कि भारत में वर्ग संघर्ष क्यों बढ़ रहा है। कुछ कारण समझ में आए। 1– भारत आंख बंद करके पश्चिम की नकल कर रहा है 2– भारत पश्चिम की नकल करते हुए शोषण को अपराध मान रहा है 3– भारत पश्चिम की नकल करते हुए अपराध नियंत्रण की तुलना में जनकल्याण को अधिक महत्व दे रहा है 4– भारत में राज्य व्यवस्था ने अपने को समाज से ऊपर मान लिया है 5– भारत में स्वतंत्र प्रतिस्पर्धा की तुलना में कमजोरों की मदद करने का सिद्धांत स्वीकार कर लिया है। इन पांच कारणों से भारत में वर्ग विद्वेष बढ़ रहा है इन समस्याओं के समाधान के लिए भारत को लोक स्वराज्य अपराध नियंत्रण की गारंटी व्यक्ति एक इकाई आत्मनिर्भर समाज और समानता की जगह स्वतंत्रता जैसी अपनी भारतीय प्रणाली को भी आगे बढ़ाना चाहिए। स्वतंत्र प्रतिस्पर्धा में राज्य को तटस्थ रहना चाहिए पक्षकार नहीं। स्वतंत्र प्रतिस्पर्धा में राज्य को किसी की मदद नहीं करनी चाहिए। यदि परिवार, गांव, जिले को विधायी अधिकार दे दिया जाए और समान नागरिक संहिता लागू कर दी जाए तो वर्ग संघर्ष की परिस्थितियों पर नियंत्रण संभव है।

3.नैतिक पतन क्योंः आज से तीन–चार दिनों तक हम इस विषय पर चर्चा करेंगे कि वर्तमान भारत में भौतिक विकास बहुत तेज गति से होने के बाद भी नैतिक पतन क्यों हो रहा है। भारत में वर्ग संघर्ष बढ़ने का कारण क्या है और उसका समाधान क्या है। मेरे विचार से प्राचीन काल में वर्ग शोषण तो था लेकिन शोषण होने के बाद भी वर्ग समन्वय था टकराव नहीं। वर्तमान भारत में वर्ग शोषण तो घट रहा है और संघर्ष या टकराव बढ़ रहा है। कुल मिलाकर यह बात साफ है कि वर्ग समन्वय के कुछ विपरीत प्रयत्न हो रहे हैं जिनके परिणाम स्वरुप टकराव बढ़ रहा है। मेरे विचार में इसका पहला कारण यह है कि प्राचीन समय में समाज और राज्य अलग–अलग तरीके से कार्य करते थे। समाज अनुशासित करता था और यदि कोई व्यक्ति समाज का अनुशासन अस्वीकार करके भी अपराध करता था तब राज्य हस्तक्षेप करता था अन्यथा नहीं। समाज के सामाजिक मामलों में राज्य का हस्तक्षेप शून्य था। उस समय समाज प्रत्येक व्यक्ति की योग्यता और क्षमता के आधार पर व्यक्ति को शक्ति सम्मान सुविधा देता था लेकिन वर्तमान समय में राज्य समर्थन और संख्या बल का अधिक आकलन करता है योग्यता

क्षमता का कम। पिछले समय में राज्य सुरक्षा और न्याय को अपनी पहली जिम्मेदारी मानता था किंतु वर्तमान राज्य जनकल्याण को प्रमुख मानता है जबकि जन कल्याण समाज का काम है राज्य का नहीं। सबसे बड़ी बुराई यह है कि भारत की राज्य व्यवस्था हर मामले में पश्चिम की नकल कर रही है। भारत की अपनी सोच की राज्य व्यवस्था में भूमिका शून्य कर दी गई है। पश्चिम की अन्ध नकल का ही परिणाम है कि राज्य ने स्वयं को समाज का सहायक या मैनेजर ना मानकर कस्टोडियन मान लिया है। इसका दुष्परिणाम है कि भारत की राज्य व्यवस्था अपनी आंतरिक समस्याओं के समाधान का मार्ग भी स्वयं ना तलाश कर पश्चिम से पूछ रही है। यही वर्तमान वर्ग संघर्ष का पहला कारण है।

वैचारिक : *Margdarshak Web Link*

4.व्यवस्था की वास्तविक इकाई: वर्तमान समय में भारत दो भागों में विभाजित है। यह विभाजन भारत की सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था में हैं, जिसमें एक विभाजन में परिवार गांव जिला प्रदेश देश हैं और दूसरे विभाजन में है परिवार कुटुंब जाति धर्म राष्ट्र। भारत का संविधान दूसरे विभाजन को अनुमति देता है पहले विभाजन को नहीं और भारत का समाज पहले विभाजन को स्वीकार करता है दूसरे को नहीं। वर्तमान भारतीय राजनीति समय–समय पर दोनों विभाजनों का उपयोग करती है लेकिन समाज को अलग–अलग गुटों में बांटने के लिए जाति धर्म यह सबसे महत्वपूर्ण माने जाते हैं मैं फिर से कहना चाहता हूं कि हम परिवार गांव जिला प्रदेश देश की व्यवस्था को स्वीकार करें जाति धर्म की व्यवस्था को नहीं।

5.व्यावसायिक पत्रकारिता भयावह: मैं बहुत पहले से मानता रहा हूं कि मीडिया पूरी तरह व्यवसाय बन गया है। विपक्ष के सभी नेताओं ने सर्वसम्मति से यह घोषित किया है कि मीडिया सरकार के सामने बिक गया है। यहां तक कि विपक्ष ने ऐसे कुछ लोगों के नाम भी प्रकाशित किए हैं। दूसरी ओर सत्ता पक्ष ने यह आरोप लगाया है कि मीडिया के अनेक लोग विपक्षी दलों के हाथ की कठपुतली बन गए हैं। विपक्षी नेता और मीडिया के लोग मिलकर विदेश से भी धन ले रहे हैं। पूरूकायस्थ जी तथा कुछ अन्य मीडिया कर्मी इस संबंध में गिरफ्तार भी किए गए हैं। चूंकि सभी राजनेताओं की नजर में मीडिया बिक गया है इसलिए मैं भी समझता हूं कि कुछ न कुछ इस बात में सच्चाई होगी। वैसे भी मीडिया को पूरी तरह व्यापार माना जा रहा है लेकिन इस व्यापार में भी जब यह बात सामने आयी कि कुछ मीडिया कर्मी चीन से धन लेकर

चीन की एजेंट की तरह काम कर रहे हैं यह बात बहुत घातक दिखी है। विदेशों से और खासकर चीन से धन लेकर चीन सरकार के पक्ष में वातावरण बनाना देश द्रोह माना जाना चाहिए व्यापार नहीं। मैं चाहता हूं कि व्यापार की भी कुछ नैतिक अनैतिक सीमा होनी चाहिए। इस मामले में विपक्षी दलों को भी संदेह के घेरे में आना स्वाभाविक है। कहीं ऐसा तो नहीं कि भारत के विपक्षी दल चीन भारत के बीच लड़ाई का दबाव यह सोचकर बना रहे थे कि यदि मोदी सरकार चीन से टकरा जाएगी तो उस लड़ाई में कुछ विपक्षी नेता चीन को अधिक ब्लैकमेल कर सकेंगे। यदि इस प्रकार का आरोप सच है तो यह भारत की मीडिया और विपक्षी दलों के लिए बहुत चिंताजनक है।

6.समस्याओं का वर्गीकरण और समाधानः यदि हम गंभीरता से विचार करें तो कुल समस्याएं पांच प्रकार की होती है पहले होती है वास्तविक समस्याएं दूसरे कृत्रिम समस्याएं तीसरी प्राकृतिक चौथी भूमंडलीय और पांचवी भ्रम मूलक । इन पांच प्रकार की समस्याओं में वास्तविक समस्याओं पर सरकार को सबसे अधिक ध्यान देना चाहिए भ्रम तो कोई समस्या होती ही नहीं है। वास्तविक समस्याएं तो सिर्फ पांच प्रकार की होती हैं चोरी डकैती लूट बलात्कार जालसाजी धोखाधड़ी मिलावट कम तोलना हिंसा बल प्रयोग आतंकवाद यही तो वास्तविक समस्याएं हैं । कृत्रिम समस्याएं भी कई प्रकार की होती हैं भ्रष्टाचार चरित्र पतन सांप्रदायिकता जातीय कटुता आर्थिक असमानता श्रम शोषण आदि अनेक समस्याएं ऐसी हैं जो वास्तविक तो नहीं है लेकिन वे समस्या बन गई है कृत्रिम समस्याओं को मुख्य रूप से राजनीतिक दल लगातार मजबूत करते हैं । प्राकृतिक समस्याओं में बाढ़ भूकंप आदि अनेक समस्याएं हैं जो प्राकृतिक हैं भूमंडलीय समस्याओं में कोरोना पर्यावरण प्रदूषण तथा अन्य अनेक समस्याएं आती हैं और भ्रम की समस्याएं अनेक प्रकार की होती हैं इनमें महंगाई बेरोजगारी महिला उत्पीड़न किसी भी प्रकार का शोषण यह सब समस्याएं वास्तव में होती ही होती नहीं है लेकिन असत्य समस्याओं को सत्य के समान स्थापित कर दिया जाता है । सरकारों को सबसे पहले वास्तविक समस्याओं को रोकने का प्रयास करना चाहिए लेकिन सरकार वास्तविक समस्याओं पर सबसे अधिक सबसे कम ध्यान देती हैं और भ्रम वाली समस्याएं जिनका कोई अस्तित्व नहीं है उन समस्याओं को रोकने में सबसे ज्यादा सक्रिय रहती हैं। भारत में तो इस प्रकार का बुरा हाल है कि भारत सरकार तो वास्तविक समस्याओं को रोकने में बिल्कुल सक्रिय ही नहीं है वह तो केवल भ्रम वाली समस्याओं को ही समस्या मानती हैं गरीबी लगातार दूर की जा रही है जबकि यह गरीबी और अमीरी

नाम की कोई समस्या होती ही नहीं है मेरा आपसे निवेदन है कि आप वास्तविक समस्याओं को प्राथमिकता के आधार पर दूर करने का प्रयास करिए।

7.अपराध नियंत्रण में समाज की भूमिका: Margdarshak Web Link

समाज में आमतौर पर दो प्रकार के लोग माने जाते हैं अच्छे और बुरे। लेकिन मैंने बचपन से ही समाज का तीन में विभाजन किया अच्छे, बुरे और बदमाश। अपराधी तत्वों को जब बदमाश श्रेणी में डाला गया तब मुझे महसूस हुआ कि उनकी संख्या बहुत कम है और हम लोग संख्या में 98: है। फिर भी यह 2: अपराधी 98: पर भारी हो जाते हैं क्योंकि वे लोग हमें अच्छे और बुरे में विभाजित कर देते हैं। मैंने अपने पूरे जीवन में अपने बीच होने वाले इस विभाजन को रोकने की कोशिश की। जब समाज में राजनैतिक व्यवस्था ठीक हो और आपराधिक तत्वों पर नियंत्रण स्वाभाविक रूप से होता रहे तब तो अच्छे बुरे के बीच विभाजन हो सकता है लेकिन जब अपराधियों का मनोबल बढ़ा हुआ हो और राजनेता भी उनके साथ समझौता कर ले तब हमें अच्छे बुरे का विभाजन रोक देना चाहिए। हम लोगों ने इस सिद्धांत पर रामानुजगंज शहर में प्रयोग किया और हमें सफलता मिली। मेरे विचार से अपराध नियंत्रण के लिए यह प्रयोग काफी सार्थक हो सकता है। इस प्रयोग में न अपराधी तत्व बाधक है न ही बुरे लोग। इस प्रयोग में सबसे अधिक बाधक वे अच्छे लोग हैं जिन्हें अपने अच्छे होने का अहंकार है। मेरा यह निवेदन है कि वर्तमान स्थिति में हमें पूरे भारत में यह प्रयोग करके देखना चाहिए। अपराध नियंत्रण की गारंटी हमारी पहली प्राथमिकता है। बुरे लोगों को सुधारना समाज का काम है राज्य का नहीं। बदमाशों को सुधारना राज्य का काम है समाज का नहीं हमें यह अंतर हमेशा अपने दिमाग में साफ रखना चाहिए।

8.आपराधिक कानून में बदलाव की जरूरत : Margdarshak web link

मैं लंबे समय से लिखता रहा हूं कि भारत के आपराधिक और न्यायिक कानून बहुत पुराने हो गए हैं और वर्तमान परिस्थितियों के अनुसार उनमें बड़ा बदलाव करने की आवश्यकता है। मुझे खुशी है कि नरेंद्र मोदी सरकार ने भारत के आपराधिक कानून में बदलाव का ड्राफ्ट लोकसभा में प्रस्तुत किया है। प्रस्तावित बदलाव पर्याप्त नहीं है किंतु बदलाव की शुरुआत होने से एक उम्मीद बनती है कि भविष्य में इस दिशा में और बदलाव हो सकते हैं। जिस समय यह

कानून बने उस समय आमतौर पर लोग सच बोलते थे शायद अपवाद स्वरूप ही कोई न्यायालय में झूठ बोलता था। वर्तमान समय में स्थिति पूरी तरह बदल रही है। न्यायालय में तो कोई सच बोलता ही नहीं है बल्कि अब तो समाज में भी झूठ बोलने वालों की बाढ़ आई हुई है। इस प्रकार का बदलाव होने के कारण कानून में भी व्यापक बदलाव होना आवश्यक है। गंभीर अपराधों में निर्दोष सिद्ध करने की जिम्मेवारी आरोपी पर होनी चाहिए पुलिस पर नहीं। इसी तरह न्यायालय में पुलिस को अपराध नियंत्रण सहायक के रूप में देखा जाना चाहिए एक पक्षकार के रूप में नहीं। पुलिस जिस व्यक्ति को अपराध सिद्ध घोषित कर देती है उसे न्यायालय में निर्दोष न मानकर संदिग्ध अपराधी माना जाना चाहिए। बहुत गंभीर मामलों में जिस जिले के लोग अपराधियों के भय से गवाही नहीं देना चाहते वहां आपातकालीन परिस्थितियां घोषित करके गुप्तचर न्याय व्यवस्था शुरू करनी चाहिए। वर्तमान समय में मोदी सरकार ने बदलाव का जो प्रस्ताव दिया है वह अपर्याप्त है फिर भी हम इस प्रस्ताव का स्वागत करते हैं।

सामाजिक : *Margdarshak Web Link*

9.मुसलमान आज कहाँ खड़े है: मेरे एक बहुत अच्छे मित्र सिद्धार्थ शर्मा जी ने बेंगलुरु से लिखा है कि मुसलमान दुनिया में तीन प्रकार के होते हैं सामान्य, कट्टर और बर्बर। सिद्धार्थ जी के अनुसार हमास कट्टर मुसलमान में गिना जाता है बर्बर मुसलमान में नहीं। लेकिन मेरे अपने विचार में हमास बर्बर गिना जाता है कट्टर नहीं। मुसलमान तीन प्रकार के होते हैं– सामान्य जो रोजा नमाज जकात आदि पांच शिक्षाओं को धर्म मानते हैं, दूसरे कट्टर मुसलमान होते हैं जो शादी तलाक संगठन आदि को महत्व देते हैं और तीसरे बर्बर मुसलमान भी होते हैं जो हमेशा जिहाद का नारा लगाते हैं। यहां तक तो मैं सहमत हूं लेकिन जिस तरह हमास ने इसराइल में घुसकर वहां के निर्दोष लोगों को बंधक बना लिया या हत्याएं कर दी वह तो बर्बरता की निशानी है कट्टरवादिता की नहीं। अभी दुनिया में जो तीन प्रकार के मुसलमान हैं उनमें साफ–साफ अंतर देखा जा सकता है पांच प्रतिशत मुसलमान सामान्य या धार्मिक माने जा सकते हैं 95: या तो कट्टर होते हैं या बर्बर होते हैं बर्बर मुसलमान ने जब इसराइल पर आक्रमण किया तो कट्टर मुसलमान ने खुशियां बनाई और जब इसराइल ने बर्बरता पर आक्रमण किया तब कट्टर मुसलमान सारी दुनिया में दया की भीख मांग रहा है आज तक मुसलमान ने यह घोषणा नहीं कि वह न्याय मांग कर लेना चाहते हैं या लड़ कर लेना चाहते हैं। दुनिया का मुसलमान एक तरफ लड़ाई जारी रखना चाहता है और दूसरी तरफ न्याय का कटोरा लिए भी

घूमता रहता है सारी दुनिया के मुसलमान ने शांति प्रिय देश में न्याय की दुहाई देनी शुरू करती है यह मुसलमान कट्टर है । अभी आज ही पाकिस्तान में जो आक्रमण किया गया वह इजराइल में नहीं किया यहूदियों ने नहीं किया हिंदुओं ने नहीं किया मुसलमान ने किया है जिसमें की 50 लोग मारे गए हैं इसलिए मेरा यह निवेदन है कि आप इस्लाम की तुलना हिंदुत्व और यहूदी या ईसाइयों से ना करें इस्लाम संगठन है धर्म नही।

10.मुसलमानो के प्रति सामाजिक धारणाः कल शनिवार को इंग्लैंड और पाकिस्तान के बीच क्रिकेट मैच हो रहा था मैं आमतौर पर क्रिकेट मैच में कोई रुचि नहीं रखता लेकिन कल मेरे मन में एक अज्ञात भाव स्थापित हो गया था कि पाकिस्तान को हारना चाहिए इसलिए मैं बीच–बीच में कई बार मैच का परिणाम देखने के लिए उत्सुक था और पाकिस्तान के हारने पर मुझे खुशी हुई। मैं सोचता हूं कि इस प्रकार की भावना मेरे अंदर कहां से आई इसमें कहीं मैं गलत हूं या भारत के मुसलमान के व्यवहार ने मुझे इस दिशा में प्रेरित किया। मैं लगातार इस बात की प्रतीक्षा करता रहता हूं कि इसराइल कितना आगे बढ़ा यह स्थिति अच्छी है या बुरी है यह मुझे नहीं पता लेकिन इस दिशा में मेरी सोच लगातार बढ़ती जा रही है । मैं तो इस विषय पर गंभीरता से सोचूंगा ही लेकिन मेरा निवेदन है कि भारत के मुसलमान भी इस विषय पर गंभीरता से सोचें कि मेरे जैसा व्यक्ति इस प्रकार से एक पक्षीय दिशा में क्यों सोचने लगा है.

मेरे कुछ मित्र प्रमोद सिंह जी जाकिर भाई संजय ताँती आदि ने मेरे विचारों में बदलाव का कारण पूछा कुछ मित्रों ने फोन भी किया मैं स्पष्ट कर दूं कि मेरे विचारों में कोई बदलाव नहीं है नीतियों में भी कोई बदलाव नहीं है जैसे–जैसे अनुभव आ रहा है समय बीत रहा है उस तरह अनुभव कुछ अलग परिणाम दे रहे हैं । मैं बचपन से ही गांधी को मानने वाला रहा मैं गांधी विचारों का प्रमुख समर्थक रहा। गांधी विचारों का विरोध किया सावरकर ने नेहरू ने अंबेडकर ने और मुसलमान ने। गांधी बटवारा नहीं चाहते थे लेकिन मुसलमान के बहुमत ने बंटवारे के पक्ष में मत दिया इससे गांधी दुखी थे। तो इन चारों को मैंने कभी माफ नहीं किया। मैंने पूरे जीवन में सावरकर नेहरू अंबेडकर और मुसलमान को माफ नहीं किया मैंने बचपन में रामानुजगंज में जो प्रयोग किया उसे प्रयोग की सफलता से मुझे ऐसा विश्वास हुआ कि मुसलमान और संघ में बदलाव संभव है उस समय संग सावरकरवादियों की आंख बंद करके नकल करता था और मुसलमान पूरी तरह धर्म को ऊपर मानते थे समाज को नहीं। लेकिन रामानुजगंज में यह बदलाव दिखा मैं बहुत संतुष्ट हुआ। लेकिन धीरे–धीरे आगे चलकर के

अनुभव बताता है कि संघ तो सावरकर वीडियो से दूर होता गया लेकिन रामानुजगंज को छोड़कर बाहर के मुसलमान अधिक से अधिक सांप्रदायिक होते गए मैं आज भी रामानुजगंज के मुसलमान के साथ खड़ा हूं लेकिन सारे देश की जो स्थिति है वह मुझे मजबूर कर रही है कि मैं नई परिस्थितियों पर विचार करूं। संघ के लोग गांधी की प्रशंसा करने लग गए हैं संघ के लोग प्रवीण तोगड़िया और बाल ठाकरे से दूरी बना रहे हैं और भारत का मुसलमान कटर से कट्टर होता जा रहा है। आज मुझे दुख होता है कि भारत का मुसलमान आज भी हिंदुओं को संवैधानिक तौर पर समान अधिकार देने के पक्ष में नहीं है क्या भारत के हिंदुओं को भी बराबरी का अधिकार नहीं मिलना चाहिए इस संबंध में मुझे भारत के मुसलमान से शिकायत है कल हम इस विषय पर अंतिम रूप से चर्चा करेंगे।

मैं यह स्पष्ट कर चुका हूं कि रामानुजगंज के मुसलमान के संबंध में मेरी धारणा अब तक नहीं बदली है क्योंकि वहां के मुसलमान के सोचने का तरीका अन्य सारी दुनिया से कुछ अलग है लेकिन देश भर के मुसलमान के संबंध में मैं यह चाहता हूं कि मेरे जैसे व्यक्ति के यदि अनुभव में कुछ ऐसे बदलाव दिख रहे हैं तो देश भर के मुसलमान को इस पर गंभीरता से विचार करना चाहिए। पहली बात तो यह है कि भारत के मुसलमान को यह बात साफ कर देनी चाहिए कि समान नागरिक संहिता का किसी भी रूप में विरोध ना किया जाए जबकि हम हिंदू ही हिंदू राष्ट्र का विरोध कर रहे हैं तो आपको समान नागरिक संहिता का समर्थन करने में क्या दिक्कत आती है और यदि आप हमें बराबरी का अधिकार नहीं दे सकते तो फिर हमारा आपका क्या संबंध हो सकता है। दूसरी बात कि मुसलमान को यह बात विचार करनी होगी कि वह समाज का निर्णय मानेंगे अथवा लड़कर न्याय लेंगे यदि कोई बात गलत हो रही है तो आप अंत में समाज का निर्णय मानेंगे या नहीं अन्याय का बदला यदि आप लड़ कर लेना चाहते हैं तो हमें इससे कोई आपत्ति नहीं है लेकिन रोना धोना छोड़िए आप दिन रात लड़ने के लिए भी तैयार रहें और रोने के लिए भी तैयार रहे यह दुहरा आचरण अब नहीं चलेगा। तीसरी बात कि आपको यह गारंटी देनी होगी कि धर्म स्थान का राजनीतिक या आतंकवादी उपयोग नहीं किया जाएगा धर्म स्थान में किसी भी परिस्थिति में कोई उग्रवादी हथियार नहीं रखे जाएंगे यदि आप धर्म स्थान का उपयोग उग्रवादी या आतंकवाद के लिए करते हैं तो आप जरा भी विश्वसनीय नहीं है इन तीन बातों की घोषणा के बाद ही मैं फिर से अपने निष्कर्ष पर विचार कर सकता हूं अन्यथा अनुभव ने मेरे सामने जो निष्कर्ष दिया है वह मैंने आपके सामने लिख दिया

11.न्याय की मांग कैसे पूरी हो: आज मैंने एक प्रश्न उठाया था कि हमारे मुसलमान भाई इस बात का जवाब दें कि वे न्याय मांग कर लेना चाहते हैं या लड़कर लेना चाहते हैं अभी तक किसी मुसलमान भाई का कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ मैं जानता हूं कि इस प्रश्न का उत्तर देना उनके बस की बात नहीं है क्योंकि मुसलमान 24 घंटे न्याय मांगने के लिए भी तैयार रहता है और लड़ने के लिए भी तैयार रहता है यहां तक कि अगर कोई दूसरा लड़ने वाला नहीं मिलेगा तो मुसलमान आपस में ही लड़ेंगे लेकिन लड़ेंगे जरूर । मेरा तो यह भी अनुभव है कि सपने में भी मुसलमान लड़ता ही रहता है कभी शांति से नहीं रहता यह एक विचित्र बात है ।इसलिए मेरा यह विचार है कि मेरे मुसलमान भाइयों को इस बात पर फिर से विचार करना चाहिए कि वे दुनिया के साथ मांग कर न्याय लेना चाहते हैं या लड़कर लेना चाहते हैं।

वैचारिक गांधीवाद : Margdarshak Web Link

12.गाँधीवादी अब साम्प्रदायिक हो चुके हैं: महात्मा गांधी सांप्रदायिकता से दूर रहते थे महात्मा गांधी मुसलमानो के साथ राजनीतिक समझौता करते थे मुसलमान के हाथों की कठपुतली कभी नहीं बने लेकिन गांधी के मरने के बाद गांधीवादी मुसलमान के हाथों की कठपुतली बन गए इन्होंने हमेशा संघ के नाम पर हिंदुत्व का विरोध किया हिंदुत्व को नुकसान पहुंचाया। 2002 में जब गोधरा कांड हुआ तो गांधीवादी मुसलमानो के साथ हो गए और गांधीवादियों ने उस समय नरेंद्र मोदी को हराने की कसम खाई थी उस कसम को आज तक निभा रहे हैं । आज भी हर गांधीवादी नरेंद्र मोदी को हराने के लिए प्राण देने तक की कसम खाता है भले ही उनके करने से एक पत्ता भी नहीं हिलता। हिंदुत्व भले ही आज भी जिंदा हो लेकिन गांधीवादी समाप्त हो रहे हैं । लेकिन अकड़ आज भी वही है कि वह किसी भी तरीके से मुसलमान को खुश रखकर ही गांधी का काम कर पाएंगे यह इनकी भूल है वास्तव में गांधी सांप्रदायिक नहीं थे और गांधीवादी पूरी तरह सांप्रदायिक हो गए हैं आज का गांधीवादी भी आंख बंद करके नरेंद्र मोदी और हिंदुत्व का विरोध करता है। पूरी दुनिया में मुस्लिम अत्याचारों के खिलाफ एक लहर उठ रही है भारत में भी इस प्रकार की लहर मजबूत हो रही है लेकिन गांधीवादी आंख बंद करके मुसलमान के साथ खड़ा है। यह गांधीवाद नहीं है गांधी के नाम की दुकानदारी है।

13.गांधीवाद – विचार या संपत्ति की सुरक्षा: आज मेरे एक गांधीवादी मित्र से मेरी रायपुर में चर्चा हुई उन्होंने दुख व्यक्त किया की सरकार ने बनारस में सर्वोदय की संपत्ति को नष्ट कर

दिया और इस तरह सरकार गांधी विचारों को समाप्त करना चाहती है मैंने उनसे यह प्रश्न किया की गांधीवादियों ने 2002 में अर्थात 20 वर्ष पहले एक प्रस्ताव पारित करके नरेंद्र मोदी को हराने का राष्ट्रीय संकल्प लिया था यह संकल्प गुजरात गांधीवादियों का नहीं था बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर था तब से गांधीवादी पूरी तरह नरेंद्र मोदी को हराने के लिए जी जान लगा देते हैं क्या यह गांधीवादी पूरी तरह नेहरू खानदान के गुलाम नहीं हो गए हैं और यदि यह नेहरू खानदान के गुलाम हैं तो उसमें गांधी कहां से आ जाते हैं क्योंकि नेहरू खानदान तो नकली गांधी है असली गांधी नहीं इसलिए यह गांधीवादी नकली गांधी के पक्षधर है गांधी विचारों के नहीं । मैंने अपने मित्र से एक दूसरा प्रश्न उठाया कि गांधी विचारों में और गांधी के नाम की संपत्ति में समानता क्या है क्या गांधी भी इस तरह विचारों के नाम पर संपत्ति इकट्ठी कर रहे थे मेरे विचार से नहीं इसलिए संपत्ति और विचार इन दोनों को एक मानने का कोई औचित्य नहीं है मेरे मित्र ने दोनों प्रश्नों का कोई उत्तर न देकर अनभिज्ञता प्रकट की उसे नहीं पता था कि 2002 में ही सर्वोदय ने सम्मेलन में मोदी को हराने के लिए प्रस्ताव पारित किया था। मैं स्पष्ट हूं की ही वर्तमान समय में सर्वोदय में विचारों के लिए कोई महत्व नहीं है सिर्फ संपत्ति की लड़ाई है सर्वोदय के दोनों गुट संपत्ति की लड़ाई लड़ रहे हैं विचारों की नहीं

14.गांधीवाद – एक जीवन पद्धतिः मैंने गांधी के मरने के बाद कई लोगों के जीवन पद्धति में गांधी की झलक देखी है उनमें से ठाकुरदास की बंग सिद्धराज जी ढढा गंगा प्रसाद अग्रवाल अविनाश भाईतथा अन्य अनेक लोग तो कालकवलित हो गए लेकिन वर्तमान समय में यदि आप जीवंत गांधी को देखना चाहते हैं तो कृष्ण कुमार जी खन्ना जो मेरठ के रहने वाले हैं उनमें अभी आप देख सकते हैं वे अपने को संपत्ति का ट्रस्टी ही समझते हैं और आप अपने जीवन में भी संपत्ति का इस तरह उपयोग करते हैं मलिक के रूप में नहीं मैं खन्ना जी से बहुत बार मिला हूं और आज भी 99 वर्ष की उम्र में उनके जीवन पद्धति में गांधी दिखता है। यदि वैचारिक धरातल पर आप कुछ–कुछ गांधी को जानना चाहते हो तो अमरनाथ भाई से भी आप चर्चा कर सकते हैं वैचारिक धरातल पर अमरनाथ भाई भी गांधी विचारों के प्रत्यक्ष प्रमाण है।

15.गांधी विनोबा के विचारों को आगे बढ़ाना आवश्यकः सामाजिक कार्यकर्ता प्रेमनाथ गुप्ता ने आज देश के प्रख्यात मौलिक चिंतक बजरंग मुनि जी से बातचीत की। प्रेमनाथ ने जब उनसे सवाल पूछा कि गांधी, विनोबा की विरासत को लेकर आपस में यह लोग क्यों लड़ रहे हैं तो उन्होंने कहा कि गांधी के शरीर की हत्या तो पहले ही गोडसे ने कर दी थी लेकिन उनके

विचारों की हत्या उस समय के तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने हीं कर दिया। महात्मा गांधी का सपना था कि लोकस्वराज पर आधारित समाज का निर्माण हो लेकिन उन्होंने इस विचार को दरकिनार करके उसकी जगह पर उन्होंने मिश्रित अर्थव्यवस्था को लागू कर दिया। उन्होंने ही सर्व सेवा संघ की स्थापना भी कराई और उसकी जिम्मेदारी विनोबा भावे को देते हुए यह यह कहा कि आप लोग केवल समाज सुधार का काम करें बाकी काम हमको आप लोगों को करने दे। मुनि जी ने यह भी कहा कि हर महापुरुष के साथ ऐसा ही होता है यह प्रकृति का नियम है कि विध्वंस के बाद निर्माण होता है। यह एक सतत चलने वाली प्रक्रिया है। उन्होंने यह भी कहा कि गांधी, विनोबा के अनुयाई बेहद ईमानदार होते हैं वह कभी कोई आर्थिक घोटाला नहीं करते और आज भी यह लोग ईमानदार हैं। लेकिन गांधी और विनोबा के भेष में कुछ नकली गांधी विनोबा के शिष्य बने हुए हैं। यही लोग गांधी विनोबा के सच्चे अनुयायियों को बेदखल करने की साजिश करते रहते हैं इन लोगों को गांधी के विचारों से कुछ भी लेना–देना नहीं है सिर्फ उनके संपत्तियों पर कब्जा करने की योजना है। यही लड़ाई के मूल है। उन्होंने आगे कहा कि इन्हीं लोगों ने पहले साबरमती आश्रम को सरकार के हवाले कर दिया और उसके बाद सर्व सेवा संघ वाराणसी को भी नष्ट किया। हो सकता है आज नहीं तो कल वर्धा आश्रम और पवनार आश्रम को भी सरकार अपने कब्जे में ले लेगी। जब हमने उनसे पूछा कि गांधी विनोबा के आश्रमों को कैसे बचाया जाए तो उन्होंने कहा कि हमने तो इन लोगों को बहुत ही नजदीक से देखा है और हमने काफी प्रयास भी किया है लेकिन यह लोग दूसरे की बात मानने के लिए तैयार ही नहीं है। हालांकि अभी भी अच्छे लोगों की कमी नहीं है। हमने यह भी प्रयास किया कि सारे अच्छे लोगों को एक जगह मिलकर के गांधी विनोबा के विचारों को आगे बढ़ाया जाना चाहिए लेकिन अच्छे लोगों की जगह गलत लोगों की संख्या ज्यादा हो गई है और वही लोग ज्यादा सक्रिय रहते हैं। इसलिए अच्छे लोग अपने को पीछे कर लेते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि दुनिया में अच्छे और बुरे दोनों रहते हैं और उनके बीच लगातार संघर्ष चलता रहता है।

16.गाँधी की सामाजिक स्वतंत्रता का अधूरा संघर्षः भारत की स्वतंत्रता में क्रांतिकारियों का भी योगदान रहा और गांधी का भी। गांधी तथा उनके अनुयाई सामाजिक स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ रहे थे तो भगत सिंह, आजाद, सुभाष चंद्र बोस आदि क्रांतिकारी राष्ट्रीय स्वतंत्रता तक सीमित थे। एक तीसरा गुट भी था जिसमें नेहरू, अंबेडकर, पटेल, सावरकर आदि शामिल थे। यह

तीसरे गुट के लोग राष्ट्रीय स्वतंत्रता के साथ–साथ सत्ता संघर्ष में भी लिप्त थे। गांधी मार्ग को जन समर्थन अधिक मिला और क्रांतिकारियों के मार्ग को बहुत कम फिर भी क्रांतिकारियों ने स्वतंत्रता में ईमानदारी से सहयोग किया। स्वतंत्रता के बाद सत्ता लोलुप लोगों ने गांधी को किनारे कर दिया और भारत सामाजिक स्वतंत्रता संघर्ष से दूर हो गया। गांधी को राष्ट्रपिता ना कह कर लोकनायक या समाज पिता कहना अधिक उपयुक्त होता क्योंकि राष्ट्रीय स्वतंत्रता को गांधी ने लक्ष्य नहीं एक पड़ाव माना था और क्रांतिकारियों ने राष्ट्रीय स्वतंत्रता को लक्ष्य घोषित कर दिया था। गांधी के मरने के बाद सामाजिक स्वतंत्रता की लड़ाई कमजोर पड़ने लगी और गांधीवादियों का भी एक गुट सत्ता संघर्ष के साथ हो गया। मुझे पता चला कि गांधीवादियों का एक गुट आचार्य कुल को सामाजिक स्वतंत्रता की लड़ाई से जोड़ने का प्रयास कर रहा है। मेरे विचार में यह एक अच्छा प्रयास है। राष्ट्रीय स्वतंत्रता की लड़ाई तो सरकार लड़ रही है लेकिन सामाजिक स्वतंत्रता की लड़ाई अभी शुरू होना बाकी है।

विविधा

17.ऊर्जा नीति का दुष्परिणाम– पर्यावरण प्रदूषणः दुनिया में पर्यावरण प्रदूषण लगातार बढ़ता जा रहा है भारत में तो दिल्ली की स्थिति बहुत ही खराब है। दो महत्वपूर्ण कारण है कि शहरों की आबादी का घनत्व बढ़ रहा है, दूसरा कृत्रिम उर्जा का प्रयोग लगातार बढ़ता जा रहा है और ये दोनों ही महत्वपूर्ण कारण है। जिनका समाधान किए बिना पर्यावरण सुधार के संभव नहीं है।

इसलिए मैं लंबे समय से लिखता रहा हूं कि यदि कृत्रिम ऊर्जा की मूल्य वृद्धि कर दी जाए तो शहरों की आबादी भी कम हो जाएगी आबादी का घनत्व भी सुधर जाएगा और आवागमन भी कम होगा जिससे प्रदूषण घटेगा। डीजल बिजली कोयला पेट्रोल गैस यह सब पर्यावरण को प्रदूषित करने वाले माध्यम है इनका प्रयोग महंगा होना चाहिए लेकिन हमारी सरकार इन्हें सुविधा के नाम पर सस्ता रखना चाहती हैं। भारत तो पेट्रोल डीजल का आयात करके भी उसे सस्ता रखने की मूर्खता कर रहा है। मेरा स्पष्ट कहना है कि कृत्रिम उर्जा की भारी मूल्य वृद्धि कर दिया जाय तो सभी समस्याएं एक साथ सुलझ जाएगी।

18.जीव दया के नुकसानः बाघ बकरी चाय वाले एक राष्ट्रीय स्तर के उद्योगपति हैं। उनकी गिनती बड़े उद्योगपतियों में होती है। उसके प्रमुख पराग देसाई का अहमदाबाद में आवारा कुत्तों

के अत्याचार के कारण मृत्यु हो गई। अरबों रुपए खर्च करने की क्षमता रखते हुए भी आवारा कुत्तों के सामने वे बेचारे बेबस हो गए। समझ में नहीं आता है कि हमारी सरकार आवारा कुत्तों और आवारा पशुओं से आम नागरिकों को बचाने का प्रयत्न क्यों नहीं करती है? यह तो सरकार की जिम्मेदारी है कि यदि वह इन आवारा पशुओं को बचाने के लिए प्रयत्नशील रहती है तो इन आवारा पशुओं से नागरिकों को बचाने का काम कौन करेगा? कुछ एक दो प्रतिशत मूर्ख लोग जीव दया के नाम पर इन आवारा पशुओं के पक्ष में खड़े हो जाते हैं। सरकार को ऐसे मूर्खों के प्रचार पर ध्यान नहीं देना चाहिए। स्पष्ट है कि मनुष्य को मौलिक अधिकार प्राप्त है जो पशुओं को नहीं है। पशुओं में जो भी व्यवस्था से चलते हैं उन्हीं पशुओं को संवैधानिक अधिकार दिया जा सकता है। इन आवारा पशुओं को कोई संवैधानिक अधिकार भी नहीं देना चाहिए। आवारा गाय बैल, आवारा बंदर भी जितना नुकसान पहुंचाते हैं वह बहुत बड़ा नुकसान है। मेरा फिर से निवेदन है कि ऐसे आवारा पशुओं से नागरिकों की रक्षा करना सरकार की जिम्मेदारी है जिसमें सरकार असफल सिद्ध हो रही है।

19.कानून तोड़ना उचित नहीं: मैंने 12 वर्ष पहले ही यह घोषणा कर दी थी कि मनमोहन सिंह के बाद नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री बनेंगे और नरेंद्र मोदी के बाद विपक्षी नेता के रूप में सबसे अच्छे नीतीश कुमार हैं और नीतीश के बाद अरविंद केजरीवाल। मैं नीतीश कुमार और अरविंद केजरीवाल में भी विपक्ष के नेता के गुण देखता रहा यद्यपि अब अरविंद केजरीवाल के विषय में मेरे मन में कुछ भ्रम पैदा हो रहा है जिस तरह प्रधानमंत्री बनने की ललक में वह नीचे उतरने जा रहे हैं वह कई प्रकार के संदेह पैदा करती हैं उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी की डिग्री के खिलाफ जो भी किया वह अनुचित था फिर भी उन्होंने जिद कर ली और हाईकोर्ट चले गए हाई कोर्ट ने उन पर ₹25000 का अर्थ दंड लगा दिया इसके बाद भी उनको अक्ल नहीं आई और उन्होंने फिर से हाई कोर्ट जाने का निश्चय किया यह मूर्खता की पराकाष्ठा थी। मेरे विचार से अरविंद केजरीवाल को कानून के समक्ष जिद नहीं करनी चाहिए कानून तोड़ने की मैंने उन्हें कभी सलाह नहीं दी थी और अब भी सलाह देता हूं कि कानून बदलिये तोड़िए मत लेकिन प्रधानमंत्री बनने की जल्दबाजी में अरविंद केजरीवाल नीचे उतरने जा रहे हैं

पक्ष विपक्ष : *Margdarshak Web Link*

20.सामाजिक टकराव की विपक्षी राजनीतीः 5 वर्ष पहले कश्मीर से धारा 370 हटाने के मामले में विपक्षी दलों ने कश्मीर के लोगों से यह उम्मीद की थी कि वहाँ कोई बहुत बड़ा तूफान आ जाएगा और सरकार असफल हो जाएगी। लेकिन विपक्ष की सारी उम्मीदें पानी के बुलबुले के समान शांत हो गई। 5 वर्ष बाद मणिपुर की घटनाओं से भी विपक्ष को इस तरह की उम्मीद पैदा हुई थी कि मणिपुर की आग मणिपुर से और आगे फैल सकती है और ईसाइयों तथा हिंदुओं के बीच सांप्रदायिकता बढ़ाने की उम्मीद की थी लेकिन धीरे–धीरे मणिपुर में भी शांति स्थापित हो रही है। मणिपुर की शांति से विपक्षी दलों और विशेष रूप से कांग्रेस पार्टी को बहुत झटका लगा है। कांग्रेस पार्टी मणिपुर के टकराव को राष्ट्रव्यापी स्वरूप देने के लिए प्रयत्नशील थी लेकिन राष्ट्रव्यापी स्वरूप की जगह मणिपुर क्षेत्रीय टकराव का भी रूप नहीं ले पाया। इस तरह कांग्रेस पार्टी की सारी उम्मीदें धरी की धरी रह गई अब विपक्षी दल कश्मीर और मणिपुर की चर्चा को बंद करके किसी एक नए टकराव की प्रतीक्षा कर रहे हैं। लगता है कि अगले चुनाव के पहले अब विपक्षी दलों की सारी उम्मीदें धरी की धरी रह जायेंगी।

21.भारतीय राजनीती की विपरीत विचारधाराएँः भारतीय राजनीति दो विपरीत दिशाओं में साफ–साफ जाती हुई दिख रही है एक तरफ है मुसलमान कम्युनिस्ट विचारधारा दूसरी तरफ है हिंदुओं के विचारधारा। इसी तरह आर्थिक मामलों में भी बिल्कुल अलग–अलग दृष्टिकोण है एक तरफ है उद्योगों का राष्ट्रीयकरण करना अधिक से अधिक पैसा गरीब लोगों में बांटना उद्योगों को बंद करना आयात बढ़ाना दूसरी तरफ है निर्यात बढ़ाना देश का उत्पादन बढ़ाना देश को आत्मनिर्भर बनाना। इन दोनों दिशाओं में सत्ता पक्ष और विपक्ष साफ–साफ बंट रहा है। इसलिए मैं नरेंद्र मोदी का समर्थक हूं मैं हिंदू हूं मैं खुले व्यापार का पक्षधर हूं मैं आत्मनिर्भर भारत देखना चाहता हूं।

इसी तरह भारतीय राजनीति में दो और केंद्र बन रहे हैं एक के केंद्र में नरेंद्र मोदी हैं तो दूसरे के केंद्र में राहुल गांधी। राहुल गांधी ने यह आरोप लगाया है कि भारत की वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था अडानी, नरेंद्र मोदी और अमित शाह मिलकर चला रहे हैं। सब कुछ इन तीन लोगों पर केंद्रित है। नरेंद्र मोदी ने आरोप लगाया है कि विपक्ष की पूरी राजनीति सोनिया गांधी, राहुल गांधी और प्रियंका के इर्द– गिर्द घूम रही है। यह तीन लोग जैसा चाहते हैं उसी तरह विपक्ष आंख बंद करके चलने को मजबूर है। मैं स्वयं समझता हूँ कि दोनों के आरोप में बहुत कुछ सच्चाई है। सत्तारूढ़ दलों की राजनीति अडानी, अंबानी, नरेंद्र मोदी मोहन भागवत

और अमित शाह मिलकर संचालित कर रहे हैं। और विपक्ष की राजनीति एकमात्र सोनिया के परिवार द्वारा संचालित की जा रही है। सत्ता रूढ़ दलों की राजनीति में चार अलग–अलग परिवारो के लोग हैं। इनमें तीन सामाजिक दिशाओं के लोग शामिल हैं जबकि विपक्ष की राजनीति एक परिवार तक सीमित है। मैं समझता हूं की राजनीति को किसी एक परिवार से बाहर निकलना चाहिए 70 वर्ष के बाद यह पहला मौका है जब भारत की सत्ता किसी परिवार के हाथों से बाहर निकली है।

22.आगामी लोकसभा चुनाव और पक्ष–विपक्ष की भूमिका: अब लोकसभा चुनाव के लिए देश लगभग तैयार हो रहा है। पक्ष और विपक्ष दोनों ही सत्ता संघर्ष के लिए लगातार नए–नए तरीके खोज रहे हैं। देश का राजनैतिक वातावरण दो दिशाओं में केंद्रित हो गया है। एक में नरेंद्र मोदी, योगी आदित्यनाथ, अमित शाह, मोहन भागवत की टीम जी जान से लगी हुई है तो दूसरी ओर राहुल गांधी, अरविंद केजरीवाल, नीतीश कुमार की जोड़ी भी उतनी ही मजबूती से टक्कर दे रही है। नरेंद्र मोदी की टीम भ्रष्टाचार नियंत्रण, भौतिक विकास और हिंदुत्व को चुनाव के लिए महत्वपूर्ण मुद्दे मान रही है तो विपक्ष जातिवाद, अल्पसंख्यक तुष्टीकरण, तानाशाही विरोध को आधार बनाकर चुनाव में उतारना चाहता है। एक तरफ नरेंद्र मोदी सरीखे एक ईमानदार और कुशल नेता का नेतृत्व है तो दूसरी ओर भी नीतीश कुमार इन मामलों में बहुत कमजोर नहीं है। नरेंद्र मोदी ने महिला आरक्षण का दाव खेला तो नीतीश कुमार ने जातिवादी आरक्षण को उसकी काट बना दिया। इस तरह दोनों ही पक्ष लगातार दांव पेंच में उलझे हुए हैं। मैं भी इस टकराव में अपने पक्ष पर विचार किया। यह बात तो बहुत अच्छी है कि नरेंद्र मोदी सरीखे ईमानदार के समक्ष नीतीश कुमार सरीखा ईमानदार और सुलझा हुआ व्यक्ति टक्कर दे रहा है लेकिन नीतीश कुमार ने जिस तरह जातिवाद को राजनैतिक हथियार बनाया है वह हथियार भले ही राजनैतिक दृष्टि से लाभकारी हो किंतु इसके दूरगामी परिणाम बहुत बुरे होंगे। युद्ध में हवा में जहर घोलना तात्कालिक रूप से भले ही मजबूरी दिखती हो किंतु भविष्य में अपने ही परिवार को इस जहर के दुष्परिणाम पीढ़ियों तक भुगतने पड़ेंगे। यद्यपि महिला आरक्षण भी समाज के लिए घातक है किंतु उस आरक्षण के दबाव में जातिवाद को प्रोत्साहन देना कई गुना अधिक घातक होगा। मैं आशा करता हूं कि आगामी लोकसभा चुनाव में भारत की जनता हिंदुओं में फूट डालने के उद्देश्य से जातिवाद को बढ़ाने के प्रयत्नों से सावधान रहेगी। मैं तो नरेंद्र मोदी के पक्ष में हूं आप क्या सोचते हैं वह आगे पता चलेगा....।

पहले नरेंद्र मोदी का इसलिए पक्षधर था क्योंकि नरेंद्र मोदी ने गुजरात में मुस्लिम सांप्रदायिकता को मजबूती से कमजोर किया और अब मैं नरेंद्र मोदी का इसलिए भी मुरीद बन गया क्योंकि उन्होंने परिवारवाद का विरोध करते हुए परिवार व्यवस्था का समर्थन किया। सच्चाई यह है कि भारत का कोई भी अन्य राजनैतिक दल परिवार व्यवस्था को उतनी मान्यता नहीं देता जितनी संघ परिवार और नरेंद्र मोदी देते हैं। कल दशहरे में रावण दहन के समय भी नरेंद्र मोदी ने जातिवाद और क्षेत्रीयता का खुलकर विरोध किया। अन्य कोई भी राजनैतिक दल जातिवाद, सांप्रदायिकता और क्षेत्रवाद का इतना खुलकर विरोध नहीं करता जितना नरेंद्र मोदी कर रहे हैं। मैं भी सांप्रदायिकता, जातिवाद और क्षेत्रवाद का पूरी तरह विरोधी हूँ इसलिए मैं नरेंद्र मोदी का पक्षधर हूँ। मैं नीतीश कुमार का भी समर्थक रहा हूँ लेकिन नीतीश कुमार ने जिस तरह जातिवाद का समर्थन शुरू किया इसके कारण नीतीश की तुलना में नरेंद्र मोदी की नीतियां अधिक अच्छी हैं।

चुनाव: Margdarshak Web Link

23.राजनीति पूरी तरह भ्रष्ट हो गईः परसों देश के दो प्रमुख नेता छत्तीसगढ़ के अंबिकापुर के आसपास ही आम सभा किये । नरेंद्र मोदी ने अपनी सभा में यह स्पष्ट किया कि विपक्षी दलों के अनेक बड़े–बड़े नेता भ्रष्टाचार में लिप्त है। इंडिया गठबंधन के नेता भ्रष्टाचार को ही आधार बनाकर राजनीति में सक्रिय दिख रहे हैं। उन्होंने कई मुख्यमंत्री के लिए भी इसी भाषा का उपयोग किया नरेंद्र मोदी के अनुसार विपक्षी दलों के अधिकांश नेता भ्रष्ट हैं। विपक्षी इंडिया गठबंधन के नेता राहुल गांधी ने भी यही बात कही कि सत्तारूढ़ दल के नेता जो बड़े–बड़े पदों पर स्थापित हैं। वे सब करीब करीब भ्रष्ट हैं सत्तारूढ़ दल में भारी भ्रष्टाचार है।

मुझे ऐसा लगता है कि दोनों ही नेता सच बोल रहे हैं राजनीति में तो आमतौर पर भ्रष्टाचार दिख ही रहा है लेकिन मेरा व्यक्तिगत अनुभव यह है कि राहुल गांधी ने भ्रष्टाचार के विरुद्ध सबसे पहले लड़ाई शुरू की थी जब मनमोहन सिंह का दिया हुआ ड्राफ्ट उन्होंने फाड़ दिया था और नरेंद्र मोदी ने सत्ता आने के बाद भ्रष्टाचार के विरुद्ध अभियान छेड़ा है दोनों ही नेता इस मामले में ईमानदार हैं लेकिन राजनीति तो पूरी तरह भ्रष्ट हो गई है और इस पर कैसे रोक लगेगी यह एक गंभीर विषय है।

24.राष्ट्रीयकरण एक सामाजिक धोखा: छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले में भारत सरकार ने बहुत ही बड़ा स्टील प्लांट लगाकर राष्ट्र को समर्पित किया है। मैं विचार करने लगा कि इसमें राष्ट्र को समर्पित किसने किया और किसको किया। वर्तमान भारत में राजनीतिज्ञ तथा सरकारी कर्मचारी पूरी तरह सरकारीकरण के सहारे अपना सरकारी व्यापार बढ़ा रहे हैं। कल भी सरकार ने इसी तरह एक सरकारी गिरोह को नगरनार स्टील प्लांट समर्पित कर दिया। अब तक सरकारीकरण के नाम पर हमारे भ्रष्ट राजनैतिक और सरकारी व्यवस्था जिस तरह की दुकानदारी करती रही है यह बस्तर का प्लांट भी उसी दुकानदारी को आगे बढ़ाएगी। होना तो यह चाहिए था कि यह प्लांट बनाकर खुले बाजार में स्वतंत्रता पूर्वक चलने दिया जाता। लेकिन राजनेता और अफसर अपने स्वार्थ के कारण सरकारीकरण को ही राष्ट्रीयकरण कह देते हैं। इस सार्वजनिक लूट में शामिल होने के लिए छत्तीसगढ़ सरकार अलग से जोर लगा रही है और केंद्र सरकार छत्तीसगढ़ को न देकर अपने पास रखना चाहती है क्योंकि दोनों का उद्देश्य भ्रष्टाचार से अधिक कुछ भी नहीं है। मैं नरेंद्र मोदी सरकार से निवेदन करता हूँ कि यदि आप भ्रष्टाचार के खिलाफ है तो यह नगरनार प्लांट खुली प्रतिस्पर्धा के लिए छोड़ देना चाहिए। यदि छत्तीसगढ़ या केंद्र सरकार भी अपनी स्वतंत्र प्रतिस्पर्धा में शामिल होना चाहे तो उसे भी प्रतियोगिता के आधार पर छूट होनी चाहिए, लेकिन स्वतंत्र प्रतिस्पर्धा का गला घोंट कर राष्ट्रीयकरण करना समाज के साथ धोखा है। सब प्रकार की आर्थिक और राजनैतिक शक्ति सरकार के हाथों से निकलकर समाज में आना ही सब समस्याओं का अच्छा समाधान है। सरकार को किसी भी प्रकार के व्यापार से बचना चाहिए।

25.छत्तीसगढ़ सरकार की भाषा क्या हो? छत्तीसगढ़ सरकार एक नया प्रयोग कर रही है। केंद्र सरकार जहां हिंदी को अधिक प्रोत्साहन देना चाहती है वहीं छत्तीसगढ़ के भूपेश बघेल छत्तीसगढ़ी भाषा को प्रोत्साहन देना चाहते हैं और राहुल गांधी अंग्रेजी को प्रोत्साहन देना चाहते हैं। इस तरह छत्तीसगढ़ में हिंदी को किनारे करके छत्तीसगढ़ी या अंग्रेजी को आगे बढ़ाने की योजना चल रही है। राहुल गांधी ने घोषणा भी की है कि हमारे देश का रहने वाला हर बच्चा अंग्रेजी भाषा में बोलने के लिए सक्षम बना दिया जाएगा। दूसरी ओर भूपेश बघेल छत्तीसगढ़ के हर व्यक्ति को छत्तीसगढ़ी सीखने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं लेकिन मैं अंग्रेजी भी जानता हूं छत्तीसगढ़ी भी जानता हूं और हिंदी भी जानता हूं। मैंने तीनों की तुलना की है और तीनों की तुलना में मैंने हिंदी को अधिक उपयुक्त पाया है। मैं समझता हूं कि हमारे छत्तीसगढ़ सरकार

को अंग्रेजी और छत्तीसगढ़ी के प्रोत्साहन पर फिर से विचार करना चाहिए। मैं अब भी मानता हूं कि हिंदी अन्य सभी भाषाओं से अच्छी है। राहुल गांधी द्वारा भी हिंदी की तुलना में अंग्रेजी को अधिक प्रोत्साहित करना अच्छी बात नहीं है।

26.छत्तीसगढ़ सरकार की शिक्षानीतिः छत्तीसगढ़ सरकार नए–नए प्रयोग करने के लिए हमेशा सक्रिय मानी जाती है। कोरोना कल में भी इन्होने भारतीय टीकों को छत्तीसगढ़ में प्रतिबंधित कर दिया था। वर्तमान समय में भी छत्तीसगढ़ सरकार ने कुछ प्राइवेट स्कूलों को एक आदेश दिया है कि प्राइवेट स्कूल अपने बच्चों को छुट्टी के दिन अतिरिक्त क्लास नहीं ले सकेंगे। विदित हो कि छत्तीसगढ़ में सरकारी स्कूलों की अपेक्षा प्राइवेट स्कूलों का स्तर अच्छा है और बहुत सस्ता है जहां सरकारी स्कूल में एक बच्चे को पढ़ने के लिए सरकार को कई हजार रुपया खर्च करना पड़ता है वहीं प्राइवेट स्कूल में हजार रुपए से कम में भी बच्चा बहुत अच्छी शिक्षा पा जाता है, क्योंकि प्राइवेट स्कूल के शिक्षक मेहनत भी अधिक करते हैं और छुट्टियों के दिनों में भी पढ़ाते हैं। सरकार ने सरकारी स्कूलों में अपना स्तर ठीक करने की अपेक्षा प्राइवेट स्कूलों के स्तर को खराब करने की योजना बनाई और उन्हें आदेश दिया कि वह छुट्टी के समय में स्कूल नहीं लगा सकेंगे या बच्चों को प्राइवेट नहीं पढ़ा सकेंगे। इस अजीबोगरीब आदेश की छत्तीसगढ़ में व्यापक प्रतिक्रिया हो रही है। मैं भी इस प्रकार के किसी आदेश के विरुद्ध हूं । प्राइवेट स्कूलों में अगर छुट्टियों के दिन भी बच्चों को पढ़ाया जाता है तो वह तो अच्छी बात है इसमें गलत क्या है।

27.नरेंद्र मोदी की चुनावी राजनीति : Margdarshak Web Link

पिछले दो–तीन महीने से नरेंद्र मोदी पूरी तरह चुनावी मूड में आ गए हैं। इसके पहले नरेंद्र मोदी ने मुफ्त बांटने का विरोध किया था। पहले नरेंद्र मोदी ने जातिवाद का भी विरोध किया था, लेकिन वर्तमान समय में नरेंद्र मोदी जातिवाद का भी समर्थन कर रहे हैं और मुफ्त रेवाड़ी का भी समर्थन कर रहे हैं क्योंकि नरेंद्र मोदी ने यह मान लिया है कि चुनाव जीतने के लिए धार्मिक विभाजन और भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई यह दो मुद्दे ही कारगर हो सकते हैं। जातिवाद और मुफ्त बांटने को अगर टकराव का भाग बनाया जाएगा तो इसमें भाजपा को नुकसान हो सकता है क्योंकि पुराने जमाने में कांग्रेस पार्टी अपने को धर्मनिरपेक्ष करती थी और अल्पसंख्यक तुष्टिकरण करती थी। वर्तमान समय में कांग्रेस पार्टी अपने को मुसलमान का

हिमायती कहती है लेकिन कांग्रेस पार्टी पुराने कार्यकाल में जातिवाद का विरोध करती थी और वर्तमान समय में जातिवाद का खुलकर समर्थन कर रही है, तो नरेंद्र मोदी के सामने इस बात का एक संकट आ गया है कि वह जातिवाद का विरोध करके अपने पैरों पर कुल्हाड़ी ना मारे । इसी तरह नरेंद्र मोदी कांग्रेस पार्टी की देखा देखी मुफ्त बांटने का भी समर्थन करने लगे हैं। यह राजनीतिक परिस्थितियां है जिन परिस्थितियों में नरेंद्र मोदी अपनी राजनीति बदल रहे हैं। स्पष्ट है कि नरेंद्र मोदी मुस्लिम तुष्टिकरण और भ्रष्टाचार पर चोट को ही चुनावी मुद्दा बनाएंगे जो विपक्ष के लिए परेशानी का कारण बनेगा।

मेरे एक मित्र ने अभी फोन करके पूछा कि क्या चुनाव के लिए नीतियां बदलना नरेंद्र मोदी के लिए उचित है क्या चुनाव के लिए इस तरह अपनी नीतियों में बदलाव करना चाहिए। मेरे विचार में वर्तमान समय चुनाव का है चुनाव महत्वपूर्ण है और चुनाव के समय अल्पकाल के लिए नीतियों में बदलाव करना किसी भी दृष्टि से गलत नहीं है। यदि हम अपने सिद्धांतों के कारण चुनाव हार जाते हैं तो यह पूरी तरह गलत होगा क्योंकि विपक्ष पूरी तरह सिद्धांत विहीन तरीके से चुनाव लड़ रहा है। विपक्ष सांप्रदायिकता को भी बढ़ावा दे रहा है, जातिवाद को भी बढ़ावा दे रहा है, लोगों को लोभ लालच में डाल रहा है कि लोग सुविधा के नाम पर वोट दे दें। इन परिस्थितियों में सिद्धांतों के साथ अल्पकाल के लिए समझौता करना कुछ भी गलत नहीं है। इसलिए मैं यह मानता हूं कि नरेंद्र मोदी जो कर रहे हैं वह परिस्थितिवश ठीक कर रहे हैं चुनाव पूरे हो जाने के बाद सिद्धांतों को लागू करने में कोई कठिनाई नहीं आएगी।

कार्यक्रम: Margdarshak Activitis link

28.महिला आरक्षण पर चर्चा: कल रात मार्गदर्शन संस्थान के दिल्ली कार्यालय में महिला आरक्षण विषय पर एक स्वतंत्र चर्चा आयोजित की गई थी। इस चर्चा में कुछ महिलाएं भी शामिल थी। मुझे भी आयोजकों ने अपनी बात रखने का अवसर दिया। मैंने मुख्य रूप से यह विचार रखा कि परिवार व्यवस्था की पहली इकाई है। परिवार में महिला और पुरुष का तब तक कोई अलग–अलग विभाजन नहीं होता जब तक वह किसी संयुक्त परिवार का एक सदस्य है। परिवार में महिलाओं के भी संयुक्त अधिकार होते हैं, अलग अधिकार नहीं। परिवार में किसे मजबूत होना चाहिए यह परिवार तय कर सकता है कानून नहीं। महिला सशक्तिकरण की आवाज पश्चिमी देशों से आयी है जहां परिवार को कानूनी मान्यता नहीं है। भारत में इस तरह की आवाज

उठाना बहुत घातक परंपरा होगी। जिस तरह दो प्रतिशत आधुनिक महिलाएं इस प्रकार के आरक्षण की आवाज उठा रही है, उन महिलाओं का पारिवारिक स्वार्थ इस आंदोलन में छिपा हुआ है। संसद कुछ सीमित परिवारों तक सिमटी जा रही है तथा महिला आरक्षण के बाद कुछ परिवारों में और अधिक सिमट जाएगी। अभी तक जो भी आरक्षण दिए गए हैं उनका समाज में आंशिक लाभ हुआ और व्यापक टकराव हुआ है। हम मणिपुर में भी देख रहे हैं, महाराष्ट्र के आंदोलन का भी हाल खराब है। देश के अन्य प्रदेशों में भी जातीय जनगणना के नाम पर समाज को आरक्षण के टकराव में डालने की तैयारी हो रही है। यह महिला आरक्षण की आवाज भी समाज के लिए बहुत घातक सिद्ध होगी। चर्चा में अन्य वक्ताओं ने भी पक्ष विपक्ष में अपने अलग–अलग विचार रखें और दो घंटे की चर्चा के बाद यह कार्यक्रम सफलतापूर्वक पूरा हुआ।

29.भागवत ज्ञानकथा सप्ताहः आज मेरी भेंट अपने पुराने मार्गदर्शक आर एन सिंह जी से हुई। जिन्होंने अब स्वामी त्याग मूर्ति के नाम से संन्यास ग्रहण कर लिया है। मेरे निवेदन पर स्वामी जी ने रामानुजगंज में 13 अक्टूबर से 19 अक्टूबर 2023 तक 7 दिनों की भागवत कथा करना स्वीकार कर लिया है। स्वामी त्याग मूर्ति जी ने चर्चा के दौरान यह बताया कि दुनिया में अच्छे लोगों की संख्या बहुत कम है क्योंकि यह अच्छे लोग किसी दूसरे को कभी अच्छा नहीं मानते। दूसरे में भले ही 99 अच्छाइयां हो किंतु यदि एक भी कमजोरी है तो ये अच्छे लोग उसे बुरा मान लेते हैं। दूसरे ओर बुरे लोगों की संख्या भी बहुत कम है किंतु उनमें एक अच्छाई है कि वे अधिकांश लोगों को अच्छा मान लेते हैं। किसी व्यक्ति में 99 बुराइयां हो और एक अच्छाई हो तो बुरे लोग ऐसे व्यक्ति को अच्छा मानकर अपने साथ जोड़ लेते हैं। मैं समझता हूं कि वर्तमान वातावरण में स्वामी जी की बात पूरी तरह सच है। यही कारण है कि अच्छे लोगों की संख्या घटती जा रही है और बुरे लोगों की बढ़ती जा रही है। हर अच्छा आदमी स्वयं को छोड़कर बाकी पूरे समाज को बुरा मानता है। जबकि हर बुरा आदमी अपने को छोड़कर पूरे समाज को अच्छा मानता है। यह एक समाज के समक्ष बहुत बड़ी समस्या है।

रामानुजगंज में स्वामी त्याग मूर्ति जी की कथा का कल चौथा दिन था । बहुत अच्छी कथा हो रही है और इस कथा के प्रसंग में मैंने भी एक बात कही कि मैं अपने जीवन में चारों वर्णों का अनुभव प्राप्त किया है। मैं बचपन में ब्राह्मण था तो पूजा पाठ करने लग गया शादी विवाह करने लग गया और फिर राजनीति में आ गया। राजनीति के अच्छे पदों पर रहा और व्यापार भी करता रहा। तो मुझे वैश्य के भी सभी अनुभव हैं और मैं पूरे परिवार सहित खेतों में

मजदूरी भी करता था तो मुझे श्रमशास्त्र का भी अनुभव है। इस तरह मैं चारों वर्णों का अनुभव प्राप्त करके इस निष्कर्ष पर पहुंचा कि दुनिया में देवासुर संग्राम लगातार चल रहा है, आज भी चल रहा है और भविष्य में भी चलता रहेगा। हमें इस संग्राम में देवताओं के पक्ष में अपनी भूमिका अदा करनी चाहिए। इसी क्रम में स्वामी जी का करीब 2 घंटे का प्रवचन होता है और सुनील देव शास्त्री जी आधे घंटे वैचारिक संतुलनवादी हिन्दुत्व पर अपनी बात रखते हैं। इस तरह प्रतिदिन रामानुजगंज में 7 दिनों की कथा चल रही है जिसका आज पांचवा दिन है।

यदि कोई व्यक्ति समाज निर्मित किसी आचार संहिता का उल्लंघन करे तो समाज उस व्यक्ति का बहिष्कार कर सकता है। किन्तु उसे दण्ड नहीं दे सकता। यदि व्यक्ति नागरिक संहिता का उल्लंघन करे तब राज्य दण्ड दे सकता है। नागरिक संहिता बनाने में राज्य को किसी प्रकार का वर्ग-भेद नही करना चाहिए। वर्ग-भेद हमेशा घातक होता है।

भावी भारत का संविधान सहयोग राशि ₹50	वर्तमान संविधान की खामियों एवं उसके निराकरण का सुंदर विश्लेषण करती, देशभर के तमाम विद्वानों एवं बुद्धिजीवियों के साथ निरंतर 20 वर्षों तक शोध के उपरांत लिखी इस पुस्तक की लोकप्रियता का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि अब तक तीन बार इसे अलग–अलग संस्थानों के द्वारा छपवाया जा चुका है।
मुनि मंथन निष्कर्ष सहयोग राशि ₹50	श्रद्धेय मुनि जी के 70 वर्षों तक देशभर के मूर्धन्य विद्वानों एवं सामाजिक कार्यकर्ताओं के साथ निरंतर 'विचार मंथन' के निष्कर्षों को सूत्र रूप में समेटे, इस पुस्तक को तैयार होने के बाद भी 4 वर्षों तक इसमें संकलित सिद्धांतों पर देशव्यापी विमर्श के उपरांत यह पुस्तक आपके सामने आ पाई है।
मौलिक व्यवस्था का विचार सहयोग राशि ₹50	यह पुस्तक 'व्यवस्था' पर तमाम वैश्विक संदर्भों के आधार पर गहन विश्लेषण प्रस्तुत करती है। समाज के प्रत्येक इकाई के स्वतंत्रता सुरक्षा के साथ पोषण की गारंटी पर एक रिसर्च मॉडल के रूप में है यह पुस्तक है।
बस अब बहुत हो चुका सहयोग राशि ₹50	व्यवस्था की खामियों एवं उसके समाधान के लिए आवश्यक प्रभावी विचार एवं उद्दीपक ऊर्जा को अपने में समेटे इस पुस्तक को लिखा है अशोक गाड़िया जी ने। यह पुस्तक 'व्यवस्था परिवर्तन' के वैचारिक पृष्ठभूमि को तैयार करती है।
मुनि मंथन सहयोग राशि ₹10	श्रद्धेय मुनि जी के विचारों को गागर में सागर सा अपने में समेटे सीधे सरल समझ में आने वाली शैली में लिखी यह पुस्तक, एक रंगकर्मी निर्देशक निर्माता एवं लेखक आनंद गुप्ता जी की रचना है। शराफत से समझदारी की ओर जाने वाले मार्ग का पथ प्रदर्शक के रूप में या पुस्तक पठनीय है।
रामानुजगज एक आवाज सहयोग राशि ₹10	अपने में श्रद्धेय बजरंग मुनि जी के जीवन की झलक समेटे इस पुस्तक को श्री नरेंद्र जी ने नाटक की शैली में लिखा है। सामाजिक समस्याओं एवं उसके निराकरण पर पात्रों के माध्यम से यथार्थ को नए रंग रोगन में प्रस्तुत करती है यह पुस्तक।
एक ही रास्ता सहयोग राशि ₹10	नुक्कड़ नाटक गीत संगीत जैसे सांस्कृतिक विधाओं से लोगों को समझदार बनने की प्रेरणा देने के लिए मुनि जी ने अपनी युवावस्था से ही प्रयास शुरू कर दिए थे। उन तमाम गीतों एवं दृश्यों को नाटक के रूप में इस पुस्तक में लिपिबद्ध किया गया है।

इन पुस्तकों का एक सेट मंगाने के लिए मात्र ₹100 का आर्थिक सहयोग और अतिरिक्त डाक खर्च देना होगा। इन पुस्तकों को एक साथ मंगाने के लिए सम्पर्क करें–8318621282, 7869250001, 9617079344

हमारी संस्थाएँ

■ मार्गदर्शक समाजिक शोध संस्थान ■ ज्ञानयज्ञ परिवार

संस्थान के कार्य ■ समाज विज्ञान पर विश्वव्यापी रिसर्च तथा निष्कर्ष निकालना।

परिवार का कार्य

■ देश भर में ज्ञान केन्द्रो का इस तरह विस्तार हो कि वहाँ स्वतंत्र विचार मंथन हो तथा संवाद प्रणाली विकसित हो।

कार्यक्रम

■ ज्ञान चर्चा –प्रतिदिन शाम साढ़े आठ से साढ़े नौ बजे तक किसी एक पूर्व घोषित विषय पर स्वतंत्र वेबिनार।

■ महायज्ञ – वर्ष में एक बार या दो बार बड़े सामुहिक यज्ञ का आयोजन।

■ मार्गदर्शक मंडल – ऐसे न्यूनतम पाँच सौ लोगों की टीम तैयार करना जो समाज विज्ञान पर रिसर्च करने की क्षमता रखते हैं।

■ ज्ञान कुंभः– वर्ष मे दो बार पंद्रह–पंद्रह दिनो के ज्ञान कुंभ जिसमें मार्गदर्शक मंडल के लोग स्वतंत्र विचार द्वारा प्रतिदिन दो–दो विषयों पर निष्कर्ष निकाल कर समाज को दें।

माध्यम

- ज्ञान तत्व पाक्षिक पत्रिका
- यू टयूब चैनल
- फेसबुक एप से प्रसारण
- इंस्टाग्राम
- वॉट्सऐप ग्रुप से प्रसारण
- टेलीग्राम
- जूम एप पर वेबिनार
- कू एप

ज्ञानतत्व पाक्षिक पत्रिका का माह में दो प्रति का प्रकाशन सुचारू रूप से होना शुरू हो गया है इसकी सहयोग राशि रू. 100/- वार्षिक अभी तय किया गया है लेख प्रस्तुती आदि पर सुझाव अवश्य दें।

पंजीकृत पाक्षिक
पंजीकरण क्रमांक–68939/98

डाक पंजीयन क्रमांक–छ.ग./रायगढ़/10/209–2021

प्रति,

श्री/श्रीमती _____

_____

_____

_____

संदेश

वर्तमान संसदीय लोकतंत्र में तो संसद एक जेल खाना है। जहां हमारा भगवान रूपी संविधान कैद है। भगवान को जेलखाने से मुक्त कराना हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। संसदीय लोकतंत्र को सहभागी लोकतंत्र में बदलना ही होगा। लोक संसद के लिये आंदोलन इसका प्रारंभिक चरण है। लोक स्वराज्य मंच ने इसकी पहल की है। लोक स्वराज्य मंच से जुड़िये और अपने भगवान को जेलखाने से मुक्त कराने की पहल कीजिए।

पत्र व्यवहार का पता

पता - बजरंग लाल अग्रवाल पोस्ट बॉक्स 15, रायपुर (छ.ग.) 492021
website : www.margdarshak.info

प्रकाशक, सम्पादक व स्वामी - बजरंगलाल
09617079344
Email : bajrang.muni@gmail.com
Support@margdarsgak.info
Facebook Id : **बजरंग मुनि** (User Name)

मुद्रक- माया प्रेस रामानुजगंज, सरगुजा (छ.ग.)